2 जनवरी 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 19
जनवरी (प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जैनदर्शन के आदर्श चरित्र : पं. टोडरमलजी

गुलाबी नगर जयपुर में जन्मे, एक श्रेष्ठ वक्ता, लेखक, साहित्यकार, संयमी श्रावक, अद्भुत और अपूर्व बुद्धि के धनी अर्थात् सर्वगुण संपन्न **आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी** जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान थे। ऐसे विद्वतरत्न पर सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी साहित्य में जैन आचार्यों, साहित्यकारों के साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व नैतिक अवदान को परिलक्षित करती वैश्विक फलक पर साहित्यिक विमर्श की शृंखला 'रसानुभूति' की छठवीं परिचर्चा के अन्तर्गत दिनांक 16 व 17 दिसम्बर को विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया

दिनांक 16 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं जयपुर इतिहास के विशेष जानकार श्री विनयकुमारजी पापड़ीवाल जयपुर ने पण्डित टोडरमल का व्यक्तित्व बताते हुए उनके समय का सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक परिदृश्य बताया। साथ ही अनेक विद्वानों और साहित्यकारों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर एवं स्वागत परिचय पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने किया।

दिनांक 17 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के वक्तव्य का लाभ मिला।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने मंगल सूचना देते हुए बताया कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी को ग्रन्थाधिराज समयसार मिलने के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह वर्ष सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, सिद्धायतन द्रोणगिरि के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कहान समयसार संप्राप्ति शताब्दी वर्ष' के रूप में मनाया जायेगा, जिसके अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में वर्षभर समयसार पर परिचर्चा की जायेगी।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित टोडरमलजी की कथा के रूप में मार्मिक जैन व अन्तरा जैन ने एवं स्वागत परिचय पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने किया। समस्त कार्यक्रम का संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा एवं अंकुरजी शास्त्री (भोपाल दूरदर्शन) ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. अर्पणजी जैन एवं संजयजी सेठी जयपुर ने किया। समस्त कार्यक्रम का प्रसारण सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर किया गया, जिसका सैंकड़ों विद्वानों व साधर्मियों ने लाभ लिया। मीडिया प्रमुख श्री दीपकराज जैन थे।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की पुण्य तिथि के अवसर पर -

विशिष्ट गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की पुण्य तिथि के अवसर पर दिनांक 6 दिसम्बर को विशिष्ट गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी में **प्रथम सत्र** के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं मुख्य अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा थे।

इस अवसर पर 'गुरुदेवश्री का जीवनवृत्त' विषय पर संदेश जैन दिल्ली, 'गुरुदेव के जीवन की प्रेरक घटनाएं' विषय पर समकित जैन ईसागढ, 'गुरुदेव न होते तो आज क्या होता' विषय पर अनिमेष जैन भारिल्ल राघौगढ, '20वीं सदी के सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व : पूज्य गुरुदेवश्री' विषय पर शुभांशु जैन जबलपुर एवं 'समकालीन विद्वानों पर गुरुदेवश्री का प्रभाव' विषय पर अंकुर जैन खड़ैरी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण अमन जैन खनियांधाना एवं संचालन आप्तअनुशील जैन दमोह ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर थे।

इस अवसर पर 'पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनशैली की विशेषता' विषय पर शाश्वत जैन भोपाल, 'गुरुदेवश्री और क्रमबद्धपर्याय' विषय पर समर्थ जैन हरदा, 'गुरुदेवश्री और मोक्षमार्गप्रकाशक' विषय पर स्वानुभव जैन खनियांधाना, 'समयसारमय गुरुदेवश्री' विषय पर संभव जैन दिल्ली एवं 'नो रिप्लाई इज़ बेस्ट रिप्लाई' विषय पर पल त्रिवेदी गांधीनगर ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सक्षम जैन ललितपुर एवं संचालन पवित्र जैन आगरा ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

संगीतमय सी.डी. का विमोचन

ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में चल रहे सिद्धचक्र मंडल विधान के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की नवीन रचना **रोला शतक/एकत्व विभक्त आत्मा** के ऑडियो सी.डी. का विमोचन श्री अजितप्रसादजी वैभव विदेह जैन दिल्ली द्वारा किया गया। ऑडियो का गायन श्री गौरव-दीपशिखा सौगानी जयपुर द्वारा किया गया है। कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

यह रचना आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल पर वीडियो के रूप में देख सकते हैं।

(10) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

द्वितीय अध्याय का सार (संसार अवस्था का स्वरूप)

(गतांक से आगे...)

नवीन कर्म बंध विचार –

नवीन कर्मबंधन का कारण क्या है? कौन-कौनसे कर्म के उदय में नये कर्म बंधते हैं – इस प्रकरण को पण्डित टोडरमलजी ने बहुत ही सुन्दर तर्कसंगत समाधान देकर समझाया है –

(1) ज्ञानावरणादि आठ कर्मों में से ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय – इन तीन का उदय तो स्वयं अभावरूप है अर्थात् अप्रकट है। जितने-जितने इन तीनों कर्मों के उदय हैं, उतने ज्ञानादि अप्रकट हैं अर्थात् अभावरूप हैं। जो स्वयं ही अभावरूप हो वह अन्य को कारण कैसे होगा? अर्थात् जो स्वयं नहीं है, वह दूसरे के बंधन में कैसे सहायक हो सकता है?

(2) इन ज्ञानावरणादि तीन कर्मों का जितना क्षयोपशम है, उतना ज्ञानादि की प्रकटता है, वह क्षयोपशम स्वभाव का अंश है और स्वभाव बंध का कारण नहीं होता। यदि स्वभाव ही बंध का कारण हो तो बंधन से छूटना कैसे संभव होगा?

इसप्रकार इन ज्ञानावरणादि तीन कर्मों का उदय एवं क्षयोपशम दोनों ही नवीन कर्मबंध के कारण नहीं हैं।

(3) वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र के उदय से परद्रव्य का संयोग होता है; लेकिन परद्रव्य भी बंध का कारण नहीं होता। वेदनीय कर्म के उदय से अनुकूल-प्रतिकूल संयोग, नाम कर्म के उदय से शरीर-संरचना, आयु कर्म के उदय से शरीर में स्थिति तथा गोत्र कर्म के उदय से उच्च-नीच कुल की प्राप्ति – ये सब भी परद्रव्य/बाह्यसंयोग ही तो हैं।

इस प्रकार ज्ञानावरणादि तीन घातिया कर्म तथा चार अघातिया कर्म – इन सात कर्मों का नवीन कर्म बंधन के साथ किसी भी प्रकार का संबंध नहीं है। अब बचा एक मोहनीय नामक कर्म, उस मोह कर्म के उदय के निमित्त से आत्मा को ममत्व आदि रूप मिथ्यात्व आदि भाव होते हैं, वे ही एक मात्र नवीन कर्म बंध के कारण हैं।

साररूप में कहा जा सकता है कि हमें प्राप्त बाह्य वैभव, संपत्ति, परिवार, आयु, शरीर की सुन्दरता-कुरूपता तथा ज्ञानादि का क्षयोपशम – ये सब बंधन के कारण नहीं हैं; बल्कि इन सबके साथ जो हमारे रागादि भाव होते हैं, वे ही नवीन कर्म बंधन के कारण होते हैं।

योग और कषाय से होने वाले बंध –

बंधन चार प्रकार का है – प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग। पौद्गलिक कर्मपरमाणुओं का आत्मप्रदेशों के समीप आना अथवा आत्मा के प्रदेश और कर्म के प्रदेशों का बंधन – **प्रदेश बंध** कहलाता है। जो कर्म परमाणु आत्मप्रदेशों की ओर आकर्षिक हुए थे, उनमें अपने-अपने स्वभाव अनुसार विभाग हो जाना अर्थात् कुछ ज्ञानावरण में, कुछ दर्शनावरण में – इस तरह विभिन्न कर्म प्रकृतियों में बंट जाना – **प्रकृति बंध** कहलाता है। प्रकृति का अर्थ स्वभाव भी होता है, वे कर्म परमाणु अपने-अपने स्वभाव अनुसार कुछ ज्ञान को आवरण करने वाले, कुछ दर्शन को आवरण करने वाले – इसप्रकार विविध स्वभावरूप बंट जाते हैं, यही प्रकृति बंध है।

ये बंधे हुए कर्म जितने समय तक आत्मप्रदेशों के साथ बंधे रहेंगे – वही **स्थिति बंध** कहलाता है और ये कर्म परमाणु जैसा फल देंगे, वह **अनुभाग बंध** कहलाता है। इनमें से प्रकृति और प्रदेश बंध – योग से एवं स्थिति और अनुभाग बंध – कषाय से होता है।

योगों के कारण जिस जीव की चंचलता अधिक होगी, उसे अधिक कर्म परमाणुओं का बंध होगा तथा जिसकी चंचलता कम होगी, उसके उतना कम कर्म परमाणुओं का बंध होगा।

योग अर्थात् आत्मप्रदेशों की चंचलता, इसमें कर्म परमाणुओं को आकर्षित करने की शक्ति होती है। वहाँ शुभयोग हो या अशुभ योग हो, **सम्यक्त्व प्राप्त किये बिना घातियाकर्मों की तो सर्व प्रकृतियों का निरन्तर बंध होता ही रहता है।** तथा अघातिया कर्मों की प्रकृतियों में यदि शुभ योग है तो साता वेदनीय आदि पुण्य प्रकृतियों का बंध होता है तथा अशुभ योग होने पर पाप प्रकृतियों का बंध होता है।

प्रकृति और प्रदेश बंध इतना महत्वपूर्ण नहीं है; जितना कि स्थिति-अनुभाग बंध; क्योंकि कितने कर्म परमाणु आये, कौनसी कर्म प्रकृतियों में बंटे, इससे जीव को क्या फर्क पड़ता है, उन्हें तो पता भी नहीं चलता। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वे कितने समय तक बंधे रहेंगे और कैसा फल देंगे; क्योंकि इसे जीव को भोगना पड़ता है और ये कषायों पर निर्भर करता है।

स्थिति और अनुभाग बंध कषाय से होते हैं। कषाय कम

करने पर कर्म कम समय के लिये और अधिक कषाय करने पर अधिक समय के लिये बंधता है, लेकिन इसमें एक अपवाद है कि मनुष्य, तिर्यंच और देव आयु में इससे विपरीत होता है अर्थात् अधिक कषाय करने पर ये तीन आयु कम बंधती है और कम कषाय करने पर अधिक बंधती है।

अब अनुभाग बंध की चर्चा करते हैं - अनुभाग बंध भी कषाय से होता है, अनुभाग अर्थात् फल। कषाय कम होने पर पाप का फल कम मिलेगा और अधिक कषाय होने पर अधिक फल मिलेगा; परन्तु पुण्य का फल तीव्र कषाय होने पर कम और मन्द कषाय होने पर अधिक मिलेगा।

अन्त में पण्डितजी ने यह बता दिया कि प्रकृति-प्रदेश बन्ध बलवान नहीं होते और कषाय से होने वाला स्थिति-अनुभाग बन्ध ही बलवान है, इसलिये हे भव्य जीवों! **जिन्हें बन्ध नहीं करना हो वे कषाय नहीं करें,** ये पण्डितजी के ब्रह्म वाक्य/सूत्र वाक्य जैसे हैं।

फिर प्रश्न खड़ा किया कि कर्म तो ज्ञानहीन हैं, जड़ हैं, वे पुद्‌गल परमाणु कर्मरूप कैसे परिणमन करते हैं? उनको कैसे पता चलता है कि ज्ञान को ढकना है, ऐसा करना है या वैसा करना है। पण्डित टोडरमलजी ने इस बात को भोजनादि का उदाहरण देकर उसे सांगोपांग घटित किया है। मुख से भोजन ग्रहण करना प्रदेश, भोजन का अलग-अलग धातुरूप परिणमित हो जाना प्रकृति, भोजन के उन परमाणुओं में से कुछ कम समय के लिये पेट में रहेंगे और कुछ अधिक समय के लिये - ये स्थिति, उन परमाणुओं में से कौनसे परमाणु कैसा फल देंगे - ये अनुभाग - इसप्रकार पण्डित टोडरमलजी ने बताया कि जिसप्रकार भोजन करने वाले के विकल्प के बिना भी भोजन चारों अवस्थाओं रूप परिणमित होता है, ठीक उसी प्रकार कर्मों की अवस्था भी जान लेनी चाहिये अर्थात् कर्म जीव के विकल्प के बिना स्वयमेव चारों बंध रूप परिणमित होते हैं।

पण्डितजी ने निमित्त-नैमित्तिक संबंध की भी चर्चा करते हुए बताया कि जिस प्रकार मंत्रादि के निमित्त से जल में रोग दूर करने की शक्ति, कंकर आदि में सर्प आदि को रोकने की शक्ति होती है, सर्प का जहर उतर जाने की शक्ति आ जाती है, उसी प्रकार यहाँ भी निमित्त-नैमित्तिक संबंध जानना। इसप्रकार नये बंध के संबंध में प्रकृति-प्रदेश बंध योग से, स्थिति-अनुभाग बंध कषाय से और मूल बंधन का कारण रहा कषाय, जिससे नवीन कर्मबंध होता है, इसप्रकार यह प्रकरण संपन्न हुआ। **(क्रमशः)**

जिनदेशना शिविर सानन्द संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में जिनदेशना युवा आध्यात्मिक शिविर दिनांक 20 से 24 दिसम्बर 2020 तक आयोजित किया गया।

उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री हितेन अनंतराय शेठ मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि श्री विनी विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री चिराग सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री रजतजी जैन बैंगलोर, श्री राहुल नवीनजी मेहता मुम्बई थे। शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री स्वप्निल पवनजी जैन मंगलायतन, आमंत्रणकर्ता श्री तीर्थेश संजयजी दीवान सूरत, सह आमंत्रणकर्ता श्री सम्यक् वीरेशजी जैन सूरत थे। शिविर ध्वजारोहणकर्ता श्री वैभव अजितप्रसादजी जैन दिल्ली एवं उद्घाटनकर्ता श्री नयनजी शास्त्री हैदराबाद थे।

प्रातःकाल श्री 170 तीर्थंकर मंडल विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, श्री नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, श्री अजितजी अचल ग्वालियर, मंगलार्थी अनुभवजी जैन करेली, डॉ. अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद आदि विद्वानों द्वारा प्रवचन व रात्रि में शंका-समाधान के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर में विभिन्न विषयों पर अनेक विद्वानों द्वारा परिचर्चा एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व सामायिक का आयोजन हुआ।

शिविर में पहली बार आठ युवा विद्वानों पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, डॉ. भागचंदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अमोलजी सिंघई हिंगोली, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, डॉ. अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद, श्री अमितजी शास्त्री अरिहंत मडावरा का सम्मान किया गया।

समापन समारोह में शिविर शिरोमणि श्री राहुल महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर, अध्यक्ष श्री हार्दिक आई.एस. जैन मुम्बई, मुख्य अतिथि डॉ. रवीशजी जैन सनावद, विशिष्ट अतिथि श्री मयूरजी जैन अमेरिका, श्री तिलक प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री रवि ब्रजलालजी जैन मुम्बई, श्री अंकित ललितजी शास्त्री लूणदा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा श्री राजेशजी काला व श्री अशोकजी उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

शोक समाचार

(1) **रायपुर (छ.ग.) निवासी श्री प्रेमचंदजी गुरहा** का अल्प बीमारी के पश्चात् दिनांक 5 सितम्बर को देहावसान हो गया। आप एवं आपका परिवार रायपुर एवं जयपुर की विभिन्न सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में निरंतर अग्रणी रहा है।

आप रायपुर टैगोर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के संस्थापक सदस्य रहे हैं। यहाँ के मंदिर में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के विराजमान करने व स्वाध्याय भवन के निर्माण में आपका तन–मन–धन से पूर्ण योगदान रहा है।

श्री टोडरमल स्मारक भवन की गतिविधियों में भी आपका निरंतर योगदान रहता था। यहाँ के शिविरों में उपस्थित होकर तो लाभ लेते ही थे, फरवरी 2012 में संपन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में महेन्द्र इन्द्र बनने का सौभाग्य भी आपको मिला था। स्मारक भवन में सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य आयोजन भी आपके द्वारा संपन्न हुआ था।

चन्देरी (म.प्र.) के तीर्थधाम आदीश्वरम् पंचकल्याणक (जनवरी 2012) में सौधर्म इन्द्र बनने का एवं इसी महोत्सव में मूलनायक आदिनाथ भगवान की 61 इंची उन्नत पद्मासन प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ। सन् 2015 में आपके विवाह की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपने समस्त परिजनों को शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर एवं पंचतीर्थों की वन्दना अभिषेक–पूजन–विधान सहित धूमधाम से करायी थी।

आपके पीछे आपकी धर्मपत्नी श्रीमती राजेश गुरहा, सुपुत्र श्री संजय–शैलेन्द्र–प्रबोध, पुत्रवधु श्रीमती सुषमा–मनीषा–रागिनी, पौत्र–पौत्री संयम–सर्वांग–सौम्या–श्रेया–रिद्धि आदि भरा–पूरा परिवार है। आपके सुपुत्र भी अनेक धार्मिक सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी हैं एवं धार्मिक सामाजिक कार्यों में अपना भरपूर योगदान देते हैं। आपके वियोग से जैन समाज व संस्थाओं की अपूरणीय क्षति हुई है।

(2) डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल बुढार के तृतीय पुत्र **श्री ज्ञानानन्द बंसल वर्कमेन इन्चार्ज एस.ई.सी.एल. धनपुरी** का दिनांक 23 अक्टूबर को 51 वर्ष की आयु में असामयिक देहावसान जागृत अवस्था में शांतपरिणामों सहित हो गया। आप धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे, आप अध्यात्मप्रेमी,अत्यंत व्यवहार कुशल व योग्य कार्यकर्ता थे।

श्रीमती आत्मप्रभा बंसल ने उनकी स्मृति में स्थानीय जिनमंदिरों के अतिरिक्त वीतराग–विज्ञान हेतु 1100/– रुपये एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– रुपये प्रदान किये।

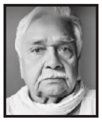

(3) टडा–सागर (म.प्र.) निवासी श्री राजकुमारजी नेता का दिनांक 22 नवम्बर को 76 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/– रुपये प्राप्त हुये।

(4) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक, संस्कृत–प्राकृत के विशेषज्ञ कुंभोज बाहुबली (महा.) निवासी डॉ. विजयसेन पाटील की धर्मपत्नी एवं वर्तमान विद्यार्थी श्रीवर्धन पाटील (शास्त्री प्रथमवर्ष) की माताजी **सौ. श्रद्धा विजयसेन पाटील** का दिनांक 19 नव. को हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया। आप बहुत ही धार्मिक महिला थीं, कुंभोज बाहुबली द्वारा संचालित हाई स्कूल में अध्यापिका थीं, मधुर कंठ के कारण वहाँ के छात्रों को भजन गाना भी सिखाती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 5000–5000/– रुपये प्राप्त हुये।

(5) खड़ैरी (म.प्र.) निवासी श्री रामकरणजी नामदेव का दिनांक 20 नवम्बर 2020 को आत्मसाधनापूर्वक देहावसान हो गया।

जैन कुल में जन्म न होने पर भी आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, अनेक बार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं बहिनश्री चम्पाबेन से तत्त्वचर्चा करने का सौभाग्य मिला। आपकी स्मृति में दिनांक 5 दिसम्बर को मुमुक्षु मण्डल खड़ैरी एवं टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद् खड़ैरी के सभी साधर्मीजनों द्वारा वैराग्य सभा आयोजित की गयी।

(6) बीना (म.प्र.) निवासी श्री शीलचंदजी सर्राफ का 77 वर्ष की आयु में दिनांक 27 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/– रुपये प्राप्त हुये।

(7) जनता कॉलोनी–जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चंद्रादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री त्रिलोकचंदजी जैन का दिनांक 4 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जनता कॉलोनी स्वाध्याय मंडल की प्रमुख कार्यकर्ता थीं, सभी धार्मिक कार्यों व मंदिर की व्यवस्थाओं में आपका सक्रिय सहयोग रहता था। आपकी स्मृति में 1100/– रुपये संस्था हेतु प्राप्त हुये।

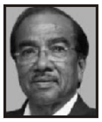

(8) सांताक्रूज–मुम्बई निवासी डॉ. सुभाषजी चांदीवाल का दिनांक 19 दिसम्बर को देवलाली–नासिक में शांत–परिणामोंपूर्वक देहावसान हुआ। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

अस्थायी वेदी का निर्माण

कानोड–उदयपुर (राज.) : यहाँ नया बाजार स्थित अतिप्राचीन श्री वीतराग दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान की वेदी के जीर्णोद्धार के लिये श्री शांतिलालजी पटवारी द्वारा अस्थायी वेदी का निर्माण किया गया।

इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर द्वारा श्री शांति विधान, विधि–विधान से मंत्रोच्चारपूर्वक वेदी शुद्धि के पश्चात् सभी प्रतिमाओं को अस्थायी वेदी पर विराजमान किया गया। डॉ. महावीरप्रसादजी द्वारा प्रतिमाओं के दर्शन, पूजन आदि के महत्व को समझाया गया।

ज्ञानपहेली – मोक्षमार्गप्रकाशक–अध्याय 6 का उत्तर

				[1,11] स	म्य	ग्द	र्श	न [12]			मि [13]		उ [14]
				म				म			थ्या		प
		[2] कु	दे	व				स्का			त्व		दे
				स		[3,15] व्यं	न्त	र			भा		श
				र		ति			[4] गा	र [16]	व		सि
	[5,17] कु	ल		ण		पा				य			द्धां
	शी					[6] त	प	श्च	र	ण			त
[7] मू	ल	गु [18]	ण							सा			र
		ण				[8] अ	य [19]	त्ना	चा [20]	र			त्न
		[9] भ	ट्टा	र	क		ति		रि		[10] म	हि	मा
		द्र							त्र				ला

ज्ञानपहेली अध्याय–6 के अन्तर्गत 33 उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 30 उत्तर सही हैं, उनके नाम निम्नप्रकार हैं –

प्रथम स्थान – **1. कल्पना सुरेश जैन, उदयपुर**

द्वितीय स्थान – **2. सलोनी जैन, कोलारस**

तृतीय स्थान – **3. उषा जैन, कोटा**

सान्त्वना पुरस्कार –

4. योगिता ठौरा, मंदसौर

5. अनिता जैन, कोटा

6. रानी जैन, उदयपुर

7. मंजू जैन, ग्वालियर

8. सुमन जैन, कोटा

अन्य सही उत्तर देने वाले – 9. अल्पना जैन भीलवाड़ा, 10. अमित कुमार जैन मुम्बई, 11. भानु कुमार जैन कोटा, 12. भरत कुमार उदयपुर, 13. भूपाल देवप्पा सांगली (महा.), 14. बिट्टी जैन छिन्दवाड़ा, 15. हेतल भाई सुरेन्द्र नगर (गुज.), 16. कंचनमाला जैन कोटा, 17. किरण जैन सूरत, 18. कुसुम जैन कोटा, 19. कुसुमकांत जैन सागर, 20. महेन्द्र गोयल भोपाल, 21. नीला भरत गांधी मुम्बई, 22. पारस जैन इन्दौर, 23. प्रियंका जैन मुम्बई, 24. रीना जैन कोलारस, 25. रीना जैन मुम्बई, 26. रुचिका पाण्ड्या जयपुर, 27. संगीता जैन मुम्बई, 28. संगीता आर. शेठ मुम्बई, 29. तारा जैन इन्दौर, 30. वीरेन्द्र कुमार जैन लखनऊ

– आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2021

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 24 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड –प्रथम वर्ष
सोमवार 25 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड –द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड –प्रथम वर्ष
सोमवार 26 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (मौखिक) 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड –द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– नीशू शास्त्री, प्रबंधक–परीक्षा बोर्ड

क्रमनियमितपर्याय

2

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इच्छानुसार कुछ नहीं होता–यह बात समझ में है आई।
इसको ही कर्त्ता कहते हैं अर यही अकर्त्ता है भाई।।
तद्रूप परिणमित होते हैं इससे कर्त्ता कहलाते हैं।
कुछ फेर–फार कर सके नहीं इसलिये अकर्त्ता हैं भाई।। ३३।।

एक बार गहराई से यह तथ्य समझ में आ जावे।
एक बार गहराई से यह सत्य समझ में आ जावे।।
एक बार चिन्तन की धारा इसी दिशा में मुड़ जावे।
एक बार श्रद्धान हमारा इस धारा में जुड़ जावे।। ३४।।

एक बार जीवनधारा भी इसी दिशा में जुड़ जावे।
जहाँ जा रहे थे अबतक अब मार्ग हमारा मुड़ जावे।।
करने–धरने का बोझ हमारे सिर से पूर्ण उतर जावे।
और सहजता इस जीवन में सहजभाव से आ जावे।। ३५।।

सहजभाव से ज्ञाता – दृष्टा रहना ही है धर्म यहाँ।
और नहीं कुछ करना है बस एकमात्र यह कर्म यहाँ।।
सहज भाव ही जीवन धन है यह ही आतम धर्म यहाँ।
धर्म कर्म है जो कुछ भी यह जिनदर्शन का मर्म यहाँ।। ३६।।

हमें नहीं कुछ करना है–यह बात समझ में नहिं आती।
हमें नहीं कुछ करना है–यह बात चित्त को नहिं भाती।।
अरे हाथ पर हाथ रखे हम कैसे बैठे रह सकते?
इस हलचल वाली दुनियाँ में हम चुप कैसे रह सकते?।। ३७।।

हम रहते थोड़ी देर शान्त तो चित्त मचलने लगता है।
हम निर्विकल्प निष्काम रहें तो भाव बदलने लगता है।।
तुम तो कहते कुछ करो नहीं पर किये बिना होगा कैसे?
तुम कहते आतमराम भजो[१] पर भजे बिना होगा कैसे?।। ३८।।

भजना भी तो करना है आखिर तुम करने पर आये।
न करना कहते रहे किन्तु आखिर हम करते ही आये।।
हम बहुत सोचते हैं भाई आखिर 'न करना' हो कैसे?
है प्रश्न हमारा तुम से ही 'न करना' करना हो कैसे?।। ३९।।

१. आत्मा का ध्यान करो।

दुनियाँ भर का बोझा अपने माथे पर लेकर चलना।
जबकि अपने हाथ नहीं है कुछ भी तो करना–धरना।।
बिना प्रयोजन उलझे रहना अर विकल्प करते रहना।
जिसमें कोई सार नहीं है उनमें ही उलझे रहना।। ४०।।

मैं करता हूँ कर सकता हूँ–ऐसा तुमने अब तक माना।
मैं ही तो कर्त्ता–धर्त्ता हूँ – ऐसा तुमने अब तक जाना।।
जो कुछ भी बन सका खूब करके देखा जाना–माना।
क्या कर पाये अब तक हे भाई अपने मन का मनमाना।। ४१।।

लाख बात में एक बात तेरे मन के अनुकूल हुई।
पर अनेक बातें हैं जो तेरे मन के प्रतिकूल हुईं।।
अनुकूल का कर्त्ता बनना प्रतिकूल की बात नहीं।
यह कैसा है न्याय कि इसमें तो कोई अनुपात नहीं।। ४२।।

अपनी क्रमनियमित पर्यायें भी यद्यपि तुम ही करते हो।
जो कुछ क्रम में होना नक्की उसके ही कर्त्ता–धर्त्ता हो।।
पर के कर्त्ता तुम नहीं किन्तु अपने कर्त्ता तो हो ही तुम।
होनेवाले परिवर्तन के तुम ही तो कर्त्ता–धर्त्ता हो।। ४३।।

कर्त्तापन से तो नहीं, बन्धु कर्त्तापन का यह बोझा तो।
है तुम पर नहीं–जानना है, जिससे उतरे यह बोझा तो।।
इस बोझे से तुम मुक्त रहो–हम तो बस यही चाहते हैं।
तुम गहराई से सोचो तो बस हम तो यही चाहते हैं।। ४४।।

अबतक हम यही समझते थे मति के अनुसार गति होती।
पर अब तो ऐसा लगता है गति के अनुसार मति होती।।
जब तीन–तीन भव आगे के दिख जाते हैं भवि जीवों को।
इसका मतलब है साफ कि भव तो पहले से ही नक्की हैं।। ४५।।

जिस भव में हमको जाना है उसके अनुसार भाव होंगे।
भाव भवों से बंधे हुये भव भी बंधते हैं भावों से।।
यदि दो तरफा ही बंधन है तो वह निश्चित ही नक्की है।
भावों का होना भव होना–यह बात एकदम पक्की है।। ४६।।

भव पहले से ही नक्की है भावों को तो अब होना है।
भव के अनुकूल भाव होवें –यह बात जरूरी होना है।।
जब पता नहीं है कि हमको आखिर किस भव में जाना है।
और वहाँ जाने को अब कैसे भावों को करना है।। ४७।।

सब होगा सहज अरे इसमें चिन्ता न आपको करनी है।
करना–धरना कुछ नहीं बन्धु जो होना है सो नक्की है।।
तुम को तो अपने जीवन में बस सहज एकदम रहना है।
जानो–देखो जानो–देखो बस सहज जानते रहना है।।४८।।

बस सहज जानते रहना है बस सहज देखते रहना है।
आतम का तो बस काम यही ज्ञाता–दृष्टा ही रहना है।।
बस ज्ञाता–दृष्टा रहना ही है आत्मध्यान का रूप यही।
बस आतम में जमना–रमना है आत्मध्यान का रूप सही।।४९।।

यह ही है असली ध्यान इसी से केवलज्ञान उपजता है।
इससे ही शान्ति प्राप्त होती इससे आनन्द बरसता है।।
मोक्षमार्ग में चलने वाले यही निरन्तर करते हैं।
इससे ही मुक्ति मिलती है जहँ नंतकाल तक रहते हैं।।५०।।

क्रम नियमित पर्यायों की यह चर्चा अजब निराली है।
जो समझेंगे भव्य उन्हें यह मुक्ति दिलाने वाली है।।
जिनका अनन्त संसार शेष उनको स्वीकार नहीं होगी।
यह परम सत्य है बात किन्तु स्वीकृत स्वकाल में ही होती।।५१।।

जिनका अनन्त संसार शेष उनको स्वीकार नहीं होगी।
ऐसा कहकर उन लोगों की निन्दा क्यों करते हो भाई।।
जो नहीं आपकी बात सुने उनकी निन्दा तो ठीक नहीं।
समझाना है तो समझाओ पर ऐसा कहना ठीक नहीं।।५२।।

जिनको भव–भव में रुलना है उनको स्वीकार नहीं होती।
जिनका अनन्त संसार शेष उनको स्वीकार नहीं होती।।
यह निन्दा के हैं वचन नहीं, है वस्तु तत्त्व का प्रतिपादन।
परमागम में किया गया इस अटल तथ्य का उद्‌घाटन।।५३।।

हम तो उसको ही बता रहे निन्दा का कोई भाव नहीं।
ऐसा क्यों? ऐसे प्रश्नों का हे भाई! कोई जवाब नहीं।।
वस्तु के स्वभाव में भाई कोई तर्क नहीं चलता।[१]
और दूसरी वस्तु का कोई अधिकार नहीं चलता।।५४।।

सब भावों को पर्यायों को देखो–जानो देखो–जानो।
कोई विकल्प मत करो सहज देखो–जानो देखो–जानो।।
इसमें भी कुछ करो नहीं बस सहज जानना होने दो।
कुछ भी कोशिश मत करो परन्तु सहज जानना होने दो।।५५।।

१. 'स्वभावोऽतर्कगोचरः' : समन्तभद्राचार्य : आप्तमीमांसा, श्लोक–१००

निन्दा की बातें मत सोचो जो बता रहे उसको जानो।
राग–द्वेष से ऊपर उठ अपने स्वरूप को पहिचानो।।
यद्यपि सब जीव एक से हैं पर पर्यायें हैं जुदी–जुदी।
वे सब स्वकाल में होती हैं मर्यादायें हैं जुदी–जुदी।।५६।।

छह महीना अर आठ समय में छह सौ आठ मोक्ष जाते।
सबके मुक्ति में जाने के लगभग समय भिन्न होते।।
हमको जाने की जल्दी है तो कुछ उपाय करना होगा।
जैसे भी हो मुक्तिरमा का शीघ्र वरण करना होगा।।५७।।

ऐसा ही जिसका चिन्तन उसको स्वकाल स्वीकार नहीं।
उसको भव–भव में रुलना है जिसको स्वकाल स्वीकार नहीं।।
जब स्वकाल होगा तब उसको सहज सहजता आवेगी।
क्रमनियमित पर्यायों की श्रद्धा उसको हो जावेगी।।५८।।

यह पहले से ही नक्की था तीर्थंकर महापद्म होंगे।
पर उसके पहले नरक गति में श्रेणिक को जाना होगा।।
जो होना है सो तदनुसार कर्मों का बंधन यथासमय।
हो जावेगा, पर होगा न कोई परिवर्तन किसी समय।।५९।।

इन बातों का जब पता चला समदृष्टि राजा श्रेणिक को।
तो सहजभाव से सभी विषय स्वीकार हो गये हैं उनको।।
यह है क्रमनियमित पर्यायों की स्वीकृति रे सच्चे मन से।
यह ही है सम्यग्ज्ञान और यह ही है सम्यग्दर्शन से।।६०।।

राजा श्रेणिक अर प्रथम नरक, श्री महापद्म तीर्थंकर की।
तीनों क्रमनियमित पर्यायें तो अनादिकाल से नक्की थीं।।
तीनों में कुछ अदलाबदली ना किसी रूप में संभव थी।
इस महासत्य की सहजभाव से सहज स्वीकृति पक्की थी।।६१।।

इस सहज स्वीकृति का पक्कापन जीवन की आधारशिला।
इसके बिना सहज जीवन को ना जीवन आधार मिला।।
दृढ़ श्रद्धा दृढ़ ज्ञान और दृढ़ चर्या के आधार बिना।
आनन्दमयी दृढ़ जीवन का रे ना कोई आधार बने।।६२।।

(क्रमशः)

अद्‌भुत प्रेरणा

पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर के प्रवचनों को सुनकर डॉ. नीतेशजी शास्त्री दुबई की सुपुत्री कु. प्रसिद्धि शाह ने प्रतिदिन आपके प्रवचनों को सुनने की प्रतिज्ञा की है। यह हम सभी के लिये अनुकरणीय है।

दसवाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ मंगलायतन विश्वविद्यालय स्थित श्री 1008 महावीर स्वामी दिग.जिनमंदिर का दसवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 19 व 20 दिसम्बर को मनाया गया।

इस अवसर पर दिनांक 19 दिसम्बर को 'आधुनिक युग में जैनदर्शन की उपयोगिता' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, प्रो. डी.एन. भार्गव लाडनूं, डॉ. पंकजजी जैन अमेरिका, डॉ. प्रेमसुमन जैन उदयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती ज्योति धानाना नैरोबी एवं संचालन मंगलार्थी अनुभव जैन करेली ने किया।

दिनांक 20 दिसम्बर को कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ए. डी. शर्मा ने की। वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. सुदीपकुमारजी जैन दिल्ली, डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली, डॉ. जयंतीलालजी जैन मंगलायतन, डॉ. धर्मचन्दजी जैन जोधपुर, डॉ. प्रियदर्शना जैन चेन्नई ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम में प्रात:काल श्री महावीर पंचकल्याणक विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में ब्र. कल्पनाबेन द्वारा धवला की वाचना, श्री पवनजी जैन एवं डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा द्वारा स्वाध्याय का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सेमिनार के उपरांत इंद्रसभा राजसभा आदि का आयोजन हुआ।

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय (शास्त्री तृतीयवर्ष) के कॉलेज सत्र 2019-20 का परीक्षा परिणाम निम्नप्रकार रहा -

परीक्षा में कुल 43 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें से 37 विद्यार्थी प्रथम एवं 6 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इनमें से **दुर्लभ जैन** पुत्र श्री दयाचंदजी जैन गुढाचन्द्रजी ने प्रथम स्थान (76.77%), **अंकित जैन** पुत्र श्री अरविन्दकुमारजी जैन भगवां ने द्वितीय स्थान (73.28%) एवं **समर्थ जैन** पुत्र श्री अजयजी जैन विदिशा ने तृतीय स्थान (72.22%) प्राप्त किया।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

(1) दिनांक 13 दिसम्बर को **'पंचभाव'** विषय पर अष्टादशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से कृणाल शाह गांधीनगर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अमन जैन आरोन ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अक्षय जैन खड़ैरी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से पल त्रिवेदी गांधीनगर ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता शाश्वत जैन सागर एवं द्वितीय सत्र में अखिल जैन मण्डीदीप रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 20 दिसम्बर को **'बारह भावना : एक अनुशीलन'** विषय पर उन्नीसवीं गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अंशु जैन भगवां ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से शुभांशु जैन जबलपुर ने किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से सोहिल पाटील हुक्केरी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आयुष जैन जबलपुर ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता प्रशांत जैन भिण्ड एवं द्वितीय सत्र में संयम जैन खैरागढ रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

ध्यान दें !

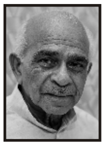

मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्री प्रकाशचंदजी (दादा) 'ज्योतिर्विद' ने ज्योतिष संबंधी पूर्ण ज्ञान देकर श्री अनुज कुमार जैन को अच्छी तरह प्रशिक्षित कर दिया है। श्री प्रकाशदादा के स्वास्थ्य को देखते हुए अब सभी मुमुक्षु भाई जैनविधि से प्रतिष्ठा, मुहूर्त आदि हेतु श्री अनुजकुमारजी से नि:शुल्क परामर्श ले सकते हैं। संपर्क सूत्र - श्री अनुजकुमार जैन, अलीगंज, जिला-एटा (उ.प्र.) मोबाइल - 9837713598

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2020

प्रति,